दृष्टि और दृष्टिकोण...

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परमात्मा कहते हैं कि नयी सृष्टि की स्थापना के लिए यह नया ज्ञान है। फिर से हमें नया बनाने के लिए यह नया ज्ञान है क्योंकि हम आत्मायें पुरानी हो चुकी हैं। यह पुरानी कैसे हो चुकी हैं? संस्कार पुराने हो चुके हैं। संस्कारों को फिर से नया बनाने के लिए बाबा हमें यह नया ज्ञान दे रहे हैं। यह ज्ञान नयी सृष्टि स्थापन करने के लिए मुख्य साधन है। बाबा के इस महावाक्य को हम सदा सामने रखें कि नयी सृष्टि स्थापन करने के लिए यह एक क्रान्तिकारी नया ज्ञान है, यह ज्ञान हमारे जीवन में क्रान्ति लाने वाला एक साधन है और उस तरह से इस ज्ञान को हमें धारण करना चाहिए।

आमतौर पर कई भाइयों से यह सुनने में आता है कि दृष्टि चंचल होती है, खराब होती है, इस पर हमें समझाइये। बाबा ने भी कई मुरलियों में कहा है कि ये आँखें धोखा देती हैं और क्रिमिनल आई (कुदृष्टि) हो जाती है। सिविल आई के बदले क्रिमिनल आई हो जाती है, दृष्टि पवित्र होने के बदले अपवित्र हो जाती है। हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि हमारी यह दृष्टि या हमारी आँखें स्वयं में न खराब हैं, न अच्छी हैं। ये तो साधन हैं। हमारी अच्छी दृष्टि या बुरी दृष्टि हमारी मान्यताओं के आधार से है, अर्थात् हमने जिसको जैसा माना, उसी के आधार से हमें अनुभव हुए और उन्हीं अनुभवों के आधार से हम उस व्यक्ति को देखते हैं। किसी व्यक्ति को देखने के अनेक पहलू हो सकते हैं। इसे समझाने से पहले हम आपको एक बात समझाना चाहेंगे कि आध्यात्मिकता कहती है कि सकारात्मक सकारात्मक को आकर्षित करता है और नकारात्मक नकारात्मक को। इस भाव से यदि लिया जाए तो व्यक्ति या तो सकारात्मक है या नकारात्मक है, तो जब वो किसी व्यक्ति के सामने जाता है उस समय यदि उसके अंदर सकारात्मकता हावी है तो वो सामने वाले व्यक्ति के अंदर सकारात्मकता ही देखेगा। और यदि नकारात्मकता हावी है तो वो हमेशा नकारात्मकता ही देखेगा। कहने का भाव यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी व्यक्ति को किस एंगल या कोण से देखता है, उसी को उस व्यक्ति का दृष्टिकोण कहते हैं। दृष्टि बदलने का आधार उस व्यक्ति के पिछले अनुभव, सुनी हुई बातें या सूचनाएं हैं जो गलत भी हो सकती हैं। उसी के आधार से हम उस व्यक्ति को ऐसा देखने लगे, तो कहा जाता है कि आपकी दृष्टि उस व्यक्ति के प्रति ठीक नहीं है। और दृष्टि से बनता है दृष्टिकोण। दृष्टिकोण बनने में कई महीने लग जाते हैं, इसलिए किसी के बारे में बनाया गया दृष्टिकोण हमारे भाग्य को खराब कर देगा। अगर हम दृष्टिकोण को परिवर्तन नहीं करेंगे तो दृष्टि भी परिवर्तन नहीं होगी। आँखें तो देखने का एक माध्यम हैं जैसे कैमरे में लेन्स होते हैं। मन की जो वृत्ति है, वह आधारित है हमारे दृष्टिकोण पर, क्योंकि वृत्ति बनती है दृष्टिकोण से। हमारा दृष्टिकोण निर्भर है हमारे इनलुक (अन्तर्दृष्टि) पर अर्थात् हमारे मन में क्या भरा हुआ है उस पर। क्या हम आशावादी हैं या निराशावादी हैं, सकारात्मक सोचते हैं या नकारात्मक सोचते हैं, यह जो हमारी सोचने की विधि है, इसको दृष्टिकोण कहा जाता है। आप जितना भी सुन लीजिये, जितनी भी कोशिश कीजिये, आपकी दृष्टि तब तक ठीक नहीं होगी जब तक आपका दृष्टिकोण ठीक नहीं होगा। आप देखते होंगे, पहले ज़माने में कवि लोग सुन्दर चेहरे के लिए चाँद का मिसाल दिया करते थे। अपनी प्रियतमा के लिए कहते थे कि उसका मुखड़ा चाँद जैसा सुन्दर है। उनका दृष्टिकोण यह था कि चाँद बहुत सुन्दर है। उनकी जो दृष्टि थी सुन्दरता की, वह उनके दृष्टिकोण पर आधारित थी। अब जब चाँद पर आदमी जाकर उतरा, उसने देखा कि वहाँ तो बहुत गड्ढे हैं, रेत ही रेत है। अब चाँद के बारे में जिसने इस बात को जाना तो वह यही समझेगा कि कवि, नारी की महिमा करने के बदले उसका अपमान कर रहा है क्योंकि चाँद में गड्ढे हैं, खराबी है। यह खराबी हमें दूर से दिखायी नहीं देती। वहाँ से जो फोटो लेकर आये हैं, उनको आप देखेंगे तो पता पड़ेगा कि चाँद तो भद्दी चीज़ है।

जिन्होंने जीवनशास्त्र पढ़ा है, इन्सान के चेहरे को माइक्रोस्कोप से देखा है, उन्हें पता है कि हमारे रोम, जिनसे पसीना निकलता है, वहाँ खड्डे ही खड्डे हैं। जिसको हम सुन्दर चेहरा समझते हैं, वह किटाणुओं से भरा पड़ा है। शरीर के अन्दर कीड़े, रोगाणु और गदंगी भरी पड़ी है। यह तो चमड़ी रूपी अच्छे से प्लास्टिक से ढ़का हुआ है जो हमें कुछ मालूम नहीं पड़ता। कचड़ेदान में जो कचड़ा डालते हैं, थूकदान में जो कुछ आप थूकते हैं वह सब इसमें है। संसार की कौन-सी गंदगी है जो इसमें नहीं हैं? लेकिन वह सब किचड़ा, गंदगी एक अच्छे-से रंगीन प्लास्टिक से ढ़का हुआ है। जिस व्यक्ति का यह दृष्टिकोण है कि यह शरीर बाहर से देखने में सुन्दर है लेकिन अन्दर क्या है? क्या उसको शरीर के प्रति आकर्षण होगा? कभी भी आकर्षण नहीं होगा। इसलिए दृष्टि तब तक नहीं बदलेगी जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा।

"हमने जिसको जैसा माना, उसी के आधार से हमें अनुभव हुए और उन्हीं अनुभवों के आधार से हम उस व्यक्ति को देखते हैं। किसी व्यक्ति को देखने के अनेक पहलू हो सकते हैं। इसे समझने से पहले हमें इस बात को समझना होगा कि आध्यात्मिकता कहती है कि सकारात्मक सकारात्मक को आकर्षित करता है और नकारात्मक नकारात्मक को। इस भाव से यदि लिया जाए तो व्यक्ति या तो सकारात्मक है या नकारात्मक है, तो जब वो किसी व्यक्ति के सामने जाता है उस समय यदि उसके अंदर सकारात्मकता हावी है तो वो सामने वाले व्यक्ति के अंदर सकारात्मकता ही देखेगा।"

राजविराज-नेपाल। व्यवस्थापिका सांसद के माननीय उपसभामुख गंगा यादव को ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

भरतपुर-छौकरवाड़ा(राज.)। नवनिर्मित गीतापाठशाला का शिव ध्वज फहराकर उद्घाटन करते हुए नागेश गुप्ता,महिला बाल विकास अधिकारी, वैर। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. योगिता व अन्य।

लहरिया सराय-बिहार। दरभंगा मेडिकल कॉलेज ऑडिटोरियम में दो दिवसीय सेमिनार 'गुड बाय डायबिटीज़' का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में कमिश्नर आर.के. खण्डवाल, ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू, प्रिन्सीपल, सुपरीन्टेंडेंट, ब्र.कु. आरती व अन्य।

लखनऊ-गोमती नगर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल में 'बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ व वुमेन ए लाइट हाऊस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए रंजना बाजपेयी,नेशनल प्रेसीडेंट,महिला समाजवादी पार्टी, जूही सिंह,चेयरपर्सन,यू.पी. स्टेट चाइल्ड राईट प्रोटेक्शन कमीशन, ईवा शर्मा,आई.एफ.एस. चीफ कंज़रवेटर ऑफ फॉरेस्ट, मो. अली साहिल,पी.एस. टू आई.जी. पॉवर लाइन,उ.प्र., ब्र.कु. चंद्रिका, ब्र.कु. राधा व ब्र.कु. मंजू।

मण्डी-हि.प्र.। जी.एस.एस.एस. बालिचौकी के प्रिन्सीपल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता। साथ हैं ब्र.कु. कृष्ण व ब्र.कु. टीना।

रादौर-कुरुक्षेत्र। मातृ दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए कुरुक्षेत्र सेवाकेन्द्र प्रमुख ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. नीरू व रादौर सेवाकेन्द्र प्रमुख ब्र.कु. राज बहन।